# शीत युद्ध और यूरोप का विभाजन (1945–1991)
# The Cold War and the Division of Europe (1945–1991)

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप वैचारिक, राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से दो भागों में विभाजित हो गया—पश्चिमी यूरोप (पूँजीवादी एवं लोकतांत्रिक) और पूर्वी यूरोप (समाजवादी एवं सोवियत प्रभाव क्षेत्र)। यह विभाजन शीत युद्ध की वैश्विक राजनीति का केंद्रीय तत्व था।

याल्टा और पॉट्सडैम सम्मेलनों के बाद यूरोप में प्रभाव क्षेत्रों का निर्धारण हुआ। सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारों की स्थापना की, जबकि पश्चिमी यूरोप को अमेरिकी सहायता (मार्शल प्लान) के माध्यम से पुनर्निर्मित किया गया। 1949 में NATO और 1955 में वारसा संधि की स्थापना ने यूरोप को सैन्य रूप से भी दो विरोधी गुटों में विभाजित कर दिया।

जर्मनी और विशेष रूप से बर्लिन शीत युद्ध का प्रतीक बन गया। बर्लिन नाकाबंदी (1948–49) और बर्लिन दीवार (1961) यूरोपीय विभाजन की चरम अभिव्यक्ति थे। पूर्वी यूरोप में सोवियत नियंत्रण के विरुद्ध हंगरी (1956) और चेकोस्लोवाकिया (1968) में विद्रोह हुए, जिन्हें सोवियत सैन्य हस्तक्षेप द्वारा दबा दिया गया।

वैचारिक स्तर पर यह संघर्ष पूँजीवाद बनाम साम्यवाद का था, किंतु यूरोप के लिए यह सुरक्षा, आर्थिक पुनर्निर्माण और राजनीतिक स्थिरता का प्रश्न भी था। पश्चिमी यूरोप में कल्याणकारी राज्य (Welfare State) का विकास हुआ, जबकि पूर्वी यूरोप में केंद्रीकृत नियोजित अर्थव्यवस्था लागू की गई।

1989 में बर्लिन दीवार के पतन और 1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ यूरोप का यह वैचारिक विभाजन समाप्त हुआ। शीत युद्ध ने यूरोप की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा संरचना को गहराई से प्रभावित किया और आधुनिक यूरोपीय एकीकरण की प्रक्रिया को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित किया।